ग्रामीण

ग्रीष्मकालीन

शिविर

मिट्टी की महक

8 - 17 मई 2026

जीविका आश्रम इन्द्राना

जबलपुर (म.प्र.)

शिविर रिपोर्ट - 2026

मिट्टी की महक – बाल शिविर

जीविका आश्रम, ग्राम इंद्राना, मझौली, जबलपुर 8 – 17 मई, 2026

शिविर की पृष्ठभूमि

"जीविका आश्रम" जबलपुर के एक दम्पत्ति श्री आशीष गुप्ता एवं श्रीमती रागिनी की पहल है, जो वर्ष 2017 से ग्राम इंद्राना में बसकर स्थानीय कारीगरों एवं ग्रामीणों के साथ मिलकर स्वदेशी ज्ञान परम्पराओं को संरक्षित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। इसी सोच और सपने को साझा करते हुए बेंगुलुरु से अपनी जड़ों की ओर लौट रहे श्री नीपेन्द्र खरे एवं श्रीमती कणिका खरे, आशीष जी से जुड़े – और इस साझे सपने से जन्म लिया **"मिट्टी की महक"** ने।

अनेक समर्पित सूत्रधारों, स्थानीय कारीगरों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के अमूल्य योगदान से यह शिविर वास्तव में एक सामूहिक प्रयास का फल बना।

यह शिविर क्यों और किसलिए?

आज जब अधिकांश समर कैंप प्रतिस्पर्धा और शहरी सुविधाओं के इर्द-गिर्द घूमते हैं – "मिट्टी की महक" उनसे बिल्कुल भिन्न था। यहाँ कोई स्क्रीन नहीं थी, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी – केवल जीवन से सीखना था। गुरुकुल शैली में साथ रहना, साथ खाना और साथ काम करना। शिक्षक नहीं, जीवन था गुरु।

इस शिविर का केंद्रीय विचार था – **शहर और गाँव के बच्चों को एक साथ, गाँव की धरती पर लाना**। दिल्ली, बेंगुलुरु, हैदराबाद, जबलपुर, कटनी, सागर जैसी जगहों से 18 शहरी बच्चे आवासीय रूप से शामिल हुए। उनके साथ इंद्राना व आसपास के गाँवों से लगभग 31 बच्चे प्रतिदिन 6 से 8 घंटों के लिए जुड़े – पूर्णतः निःशुल्क।

साझा शिल्प, साझा खेल, साझा भोजन और साझा प्रार्थना के इस मेलजोल ने दोनों वर्गों के बच्चों में सहानुभूति और आपसी सम्मान का भाव जगाया। शहरी बच्चों ने गाँव की सादगी को जिया और ग्रामीण बच्चों ने अपनी कलाओं और परम्पराओं में नया गर्व महसूस किया।

10 दिनों में क्या-क्या हुआ?

हर सुबह एक नए अनुभव के साथ शुरू होती थी – शंकरगढ़ की पहाड़ी चढ़ाई, हिरण नदी के किनारे स्थानीय मछुआरे से मुलाकात, जंगल में बैठकर प्रकृति की आवाज़ें सुनना, स्थानीय कुम्हारों के घर जाकर मिट्टी की कला सीखना, खेती-किसानी में श्रमदान।

पाँच मुख्य गतिविधियों – **चित्रकारी, कुम्हारी, गोबर आर्ट, चरखा और कुकिंग** – में बच्चों ने हाथ से करके सीखा। नीम की दातून से पेंटिंग, भट्टी में मिट्टी पकाना, आटा चक्की पर गेहूँ पीसना, गोबर के कंडे पर गक्कड़ सेंकना – ये सब अनुभव किसी भी कक्षा से बढ़कर थे।

शाम की प्रार्थना में दोहों की चर्चा, टीम गेम्स से सहयोग की सीख, "परस्परता का जाल" गतिविधि से गाँव के सामाजिक ताने-बाने की समझ और चिप्स बनाम आलू की चर्चा से समझदार उपभोक्ता बनने की प्रेरणा – ये जीवन के वो पाठ थे जो किताबों में नहीं मिलते।

एक सामूहिक सपने का साकार होना

"मिट्टी की महक" सिर्फ एक समर कैंप नहीं था – यह एक ऐसा प्रयोग था जिसने शहर और गाँव के बच्चों को एक ही आँगन में लाकर खड़ा किया। गाँव की धरती पर, गाँव की कलाओं के बीच, दोनों ने एक-दूसरे से सीखा और एक-दूसरे को समृद्ध किया। जब इरादा नेक हो और साथ पक्का हो – तो माटी भी महकती है।

जब तक माटी की यह महक हमारे साथ है – हम फिर मिलेंगे! 🌾

DAY # 1

"मिट्टी की महक" समर कैंप - पहला दिन | जीविका आश्रम 🌾
8 मई, 2026 ✨

आज से शुरू हुआ लोक-संस्कृति और मस्ती का उत्सव! आज 'जीविका आश्रम' में 40 नन्हे-मुन्नों की खिलखिलाहट और उत्साह के साथ हमारे समर कैंप "**मिट्टी की महक**" का शानदार आगाज हुआ। गाँव के बच्चों के चेहरे की चमक और कुछ नया सीखने की चाह ने आज के दिन को बेहद खास बना दिया।

आज हमने क्या किया?

🎵 **सुरमई शुरुआत और उद्घाटन**: दिन का आगाज़ ठेठ लोक संगीत की सुरीली धुनों के साथ हुआ। इसके बाद आए हुए अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कैंप का विधिवत उद्घाटन किया और बच्चों का हौसला बढ़ाया।

🌧️ **बारिश की बूंदें और दोस्ती के खेल**: इसके बाद बच्चों के बीच की झिझक मिटाने के लिए 'आइस ब्रेकर' गेम्स खेले गए। मजेदार बात यह रही कि खेल के बीच ही आसमान से बरसती बारिश की बूंदों ने मौसम को सुहाना बना दिया और बच्चों का उत्साह दोगुना हो गया!

🎲 **खेल, ठहाके और 'कहानी क्यूब्स'**: शाम के सत्र में परिचय और मेल-जोल बढ़ाने के लिए कुछ और मजेदार खेल हुए। इसके बाद बच्चों ने मैदान संभाल लिया और 'लगोरी' व 'लंगड़ी' जैसे पारंपरिक खेलों का जमकर आनंद लिया। वहीं दूसरी तरफ, 'कहानी क्यूब्स' के साथ बच्चों ने अपनी कल्पनाओं को पंख दिए और प्यारी-प्यारी कहानियाँ बुनीं।

🙏 **प्रार्थना और सुरीला भजन**: दिन का ढलना ईश्वर के स्मरण के साथ हुआ। सबने मिलकर प्रार्थना की और गाँव के ही कुछ बच्चों ने बेहद सुरीली आवाज़ में 'भजन' गाकर पूरे माहौल को भक्तिमय और शांत कर दिया।

📝 **विदाई और मंथन**: अंत में पूरे दिन की गतिविधियों पर बच्चों के साथ अनौपचारिक चर्चा (Debriefing) हुई और इसी के साथ पहले दिन का समापन हुआ।

कल की तैयारी:

आज तो बस पहला कदम था, असली जादू तो कल से शुरू होने वाला है! कल से बच्चे अपनी माटी की कलाओं से जुड़ेंगे, जिसमें शामिल हैं:

🎨 चित्रकारी (Painting) | 🪵 गोबर आर्ट | 🧵 चरखा चलाना | 🍳 कुकिंग | 🏺 मिट्टी के बर्तन (Pottery)
कल फिर मिलेंगे नए हुनर, नई सीख और "मिट्टी की महक" के साथ!

DAY 2

"मिट्टी की महक" समर कैंप – दूसरा दिन | जीविका आश्रम 🌾
9 मई, 2026 ✨

भोर की पहाड़ी चढ़ाई से शुरू हुआ दूसरा दिन!
आज सूरज के उगने से पहले ही, सुबह 5:30 बजे, हमारे सभी आवासीय बच्चों ने और कुछ गाँव के साथियों ने मिलकर शंकर गढ़ की पावन चढ़ाई की। लगभग सभी बच्चे समय पर तैयार थे — इस उत्साह को देख मन प्रसन्न हो गया। पहाड़ी मंदिर की यात्रा ने दिन की शुरुआत को ऊर्जा और श्रद्धा से भर दिया।

आज हमने क्या किया?

🎨 गतिविधियों का आगाज़ — अपनी राह, अपनी कला:
सुबह 9 बजे शिविर की औपचारिक शुरुआत हुई। आज बच्चों को उनकी रुचि की गतिविधियाँ सौंपी गईं —
🎨 चित्रकारी | 🪵 गोबर आर्ट | 🧵 चरखा | 🍳 कुकिंग | 🏺 मिट्टी के बर्तन

एक प्यारी बात हुई — खाना पकाने में सबसे ज़्यादा रुचि दिखी, यहाँ तक कि लड़कों ने भी! उनका तर्क था — "जब माँ पास नहीं होगी, तो खाना तो खुद ही बनाना पड़ेगा!" यह सोच देखकर दिल खुश हो गया। अब हर बच्चा प्रतिदिन दो गतिविधियाँ करेगा। आज का दिन सेटलमेंट का था — बच्चे और सहयोगी दोनों नए माहौल में ढल रहे थे। कल से असली रफ़्तार पकड़ेगी!

🌧️ **शाम के खेल और फिर बारिश की मेहमानी:**
शाम को गतिविधियों के बाद बच्चों ने जमकर खेल खेले — छोटे-छोटे मज़ेदार खेलों के साथ लगोरी भी खेली गई। और जैसे कल का सिलसिला आज भी जारी रहा — बारिश की बूंदों ने फिर आकर मौसम को सुहाना कर दिया और बच्चों की खिलखिलाहट दोगुनी हो गई!

🙏 **प्रार्थना और दोहे की गहराई:**
दिन का समापन प्रार्थना से हुआ। और इस बार बच्चों ने रहीम जी के इस अमर दोहे पर मन लगाकर चर्चा की —

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परि जाय॥"

प्रेम और रिश्तों की इस गहरी बात को बच्चों ने अपने-अपने अनुभव से समझा। चर्चा सुंदर रही।

कल की उम्मीद:

कल से बच्चों को गतिविधियों में और अधिक समय मिलेगा, ताकि वे नई कलाओं में रुचि और महारत दोनों पा सकें। शंकर गढ़ की ऊँचाई से शुरू हुआ यह दिन, रहीम के दोहे की गहराई पर उतरकर समाप्त हुआ — यही है "मिट्टी की महक" की असली खुशबू!

Day 3

मिट्टी की महक" समर कैंप - तीसरा दिन | जीविका आश्रम🌾
10 मई, 2026 ✨

सिंदूर के फूलों से हुई तीसरे दिन की सुगंधित शुरुआत!
आज सुबह आवासीय बच्चों ने एक अनोखा अनुभव लिया — सिंदूर के पौधे के फूल तोड़े और उनके बीज अलग किए। हम में से अधिकांश ने पहली बार इस पौधे के फूल और बीज इतने करीब से देखे। प्रकृति की इस छोटी-सी पाठशाला ने दिन की शुरुआत को यादगार बना दिया।

आज हमने क्या किया?

🎨 **चित्रकारी — जब प्रकृति बनी तूलिका**:
आज चित्रकारी में बच्चों ने कमाल कर दिया! उन्होंने बाहर जाकर प्रकृति से पाँच अलग-अलग चीज़ें चुनीं — पत्थर, पत्तियाँ, टहनियाँ और भी बहुत कुछ — और इन्हीं को अपना ब्रश बनाकर अद्भुत चित्र बनाए। जो कलाकृतियाँ उभरकर आईं, वे देखते ही बनती थीं। सच में, जब प्रकृति खुद कूची थामे, तो चित्र तो अनोखे होंगे ही!

🏺 **कुम्हारी — माटी की कठिनाई को समझा**:
आज कुम्हारी में बच्चों को मिट्टी को चिकना और मुलायम बनाने का काम सौंपा गया। तब जाकर एहसास हुआ कि यह काम कितना कठिन और धैर्य माँगने वाला है! फिर चाक पर आकार देते समय यह भी समझ आया कि सही दबाव और सधे हुए हाथ के बिना मिट्टी मनमानी करती है। कुम्हार की कला के प्रति सम्मान कई गुना बढ़ गया।

🍳 **कुकिंग — सिल-बट्टे पर जल-जीरे की तैयारी**:
आज रसोई गतिविधि में बच्चों ने सिल-बट्टे का उपयोग करना सीखा! जल-जीरे के लिए मसालों का पेस्ट बनाते हुए बच्चों को पहली बार यह एहसास हुआ कि हमारी दादी-नानी के ज़माने का यह पारंपरिक तरीका कितनी मेहनत और कौशल माँगता है। मिक्सर की जगह सिल-बट्टे पर हाथ आज़माना अपने आप में एक नया और रोमांचक अनुभव रहा!

🌿 **आयुर्वेद की पाठशाला — दिनचर्या और दंत मंजन**:
दोपहर बाद एक विशेष सत्र हुआ जिसमें हमारे स्थानीय आयुर्वेदिक चिकित्सक अभय भैया पधारे। उन्होंने बच्चों को सुव्यवस्थित दिनचर्या के महत्व को सरल और रोचक ढंग से समझाया। इसके बाद उन्होंने घर में उपलब्ध सामग्री से दंत मंजन बनाने की विधि सिखाई। त्रिफला, कोयला, गोबर की राख, मुलेठी जैसी चीज़ों से उन्होंने कई प्रकार के दंत मंजन हमारे सामने तैयार किए — और फिर सबने मिलकर उन्हें आज़माया भी!

अभय भैया का बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकालकर बच्चों को आयुर्वेद और स्वस्थ जीवनशैली का यह अनमोल ज्ञान दिया। 🙏

🎯 **खेल-खेल में — आज कंचे भी आए मैदान में**:
खेलों में आज एक नया नाम जुड़ा — कंचे! बच्चों ने अन्य परंपरागत खेलों के साथ-साथ कंचे खेलकर बचपन की उस मिठास को महसूस किया जो आजकल कम होती जा रही है।

🙏 **प्रार्थना, दोहा और हनुमान चालीसा**:
दिन का समापन प्रार्थना और कबीर दास जी के इस दोहे के मंथन से हुआ —

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥"

बच्चों ने समझा कि सच्ची बड़ाई केवल ऊँचाई में नहीं, बल्कि दूसरों के काम आने में है। और अंत में सबने एक स्वर में हनुमान चालीसा का पाठ किया — पूरा वातावरण भक्ति और ऊर्जा से गूँज उठा।

कल की उम्मीद:

सिंदूर के बीजों से शुरू होकर खजूर के दोहे पर समाप्त हुआ आज का दिन एक संदेश दे गया — ऊँचाई नहीं, उपयोगिता मायने रखती है। कल बच्चे और गहरे उतरेंगे अपनी-अपनी कलाओं में!

DAY 4

"मिट्टी की महक" समर कैंप - चौथा दिन | जीविका आश्रम 🌾
11 मई, 2026 ✨

हिरण नदी के किनारे हुई चौथे दिन की ताज़ी शुरुआत!
आज सुबह आवासीय बच्चों ने पास बहती हिरण नदी तक की सैर की। नदी किनारे उनकी मुलाकात हुई सुंदर चाचा से – जो यहाँ के स्थानीय मछुआरे हैं। सुंदर चाचा ने बच्चों का गर्मजोशी से स्वागत किया और फिर क्या – पहेलियों की झड़ी लग गई! बच्चे उत्साह से एक-दूसरे से आगे बढ़कर जवाब देने लगे। नदी की कलकल, सुबह की ताज़ी हवा और सुंदर चाचा की पहेलियाँ – दिन की शुरुआत बिल्कुल निराली रही।

आज हमने क्या किया?

💪 **गतिविधियों में बढ़ता आत्मविश्वास**:
आज साफ़ दिखा कि बच्चे अब अपनी-अपनी गतिविधियों में रच-बस रहे हैं। चित्रकारी हो, कुम्हारी हो, चरखा हो या रसोई – हर जगह हाथ और मन दोनों पहले से ज़्यादा सधे हुए नज़र आए। शिविर का असली रंग अब चढ़ने लगा है!

🤝 **सहयोगी खेल और सीख – मिलकर चलो, बड़ा करो**:
आज का सबसे खास हिस्सा रहा सहयोगी खेल (Collaborative Games)। खेलते समय बच्चे बार-बार कार्य पूरा करने में असफल हो रहे थे और कई बच्चों के मुँह से निकला –
"मुझे अकेले करने दो, मैं अकेले बेहतर कर लूँगा!"

यही बात बाद में सबसे गहरी सीख बन गई।

प्रार्थना के दौरान हुई चर्चा में यह बात उभरकर आई – छोटे काम अकेले हो सकते हैं, लेकिन बड़े लक्ष्य के लिए टीम चाहिए। और टीम तभी काम करती है जब हो –

🗣️ **स्पष्ट संवाद** – सही बात, सही समय पर
📋 **योजना** – पहले सोचो, फिर करो
🤲 **मिलकर काम** – अहंकार छोड़ो, लक्ष्य पकड़ो

यह सीख बच्चों के चेहरे पर साफ़ दिखी – खेल हारे, पर समझ जीती!

🌱 **आदतों की नींव – आज से ही, अभी से ही**:
आज एक और महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हुई – अच्छी आदतें और उन्हें बचपन में ही अपनाने का महत्व। बच्चों को समझाया गया कि जिस उम्र में वे अभी हैं, यही वह समय है जब अच्छी आदतें पक्की जड़ें जमाती हैं। जैसे एक छोटा पौधा सही देखभाल से मज़बूत पेड़ बनता है, वैसे ही आज की अच्छी आदत कल का मज़बूत इंसान बनाती है।

🎯 **खेल, प्रार्थना और दिन का समापन**:
खेलों के बाद प्रार्थना के साथ दिन का समापन हुआ। आज की चर्चा – सहयोग, संवाद और आदतें – बच्चों के मन में एक नई सोच की बीज बो गई।

कल की उम्मीद:
हिरण नदी की लहरों और सुंदर चाचा की पहेलियों से शुरू हुआ यह दिन एक बड़ा संदेश दे गया – अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। मिलकर चलने की यह सीख बच्चे जीवन भर याद रखेंगे। कल और नए अनुभव, और नई सीख के साथ फिर मिलेंगे!

DAY # 5

"मिट्टी की महक" समर कैंप - पाँचवाँ दिन | जीविका आश्रम 🌾
12 मई, 2026 ✨

दस्सू चाचा और अर्जुन के घर से हुई पाँचवें दिन की मिट्टी-सनी शुरुआत!
आज सुबह आवासीय बच्चे निकले सीधे दो कुम्हारों के घर की ओर — दस्सू चाचा और अर्जुन के यहाँ। यह कोई साधारण भ्रमण नहीं था — यह था उस कला की जड़ों तक जाना जो सदियों से हमारी माटी में बसी है। बच्चों ने वहाँ सीखा **थापा-पिंडी** की विधि — यानी हाथों से थपथपाकर मिट्टी के बर्तन का आकार कैसे बढ़ाया जाता है। और फिर देखा कि मिट्टी को बिल्कुल शुरू से तैयार करने की पूरी प्रक्रिया क्या होती है। जो मिट्टी हम बस "मिट्टी" कहकर टाल देते हैं, उसमें कितनी मेहनत और समझ छुपी है — यह आज जाकर पता चला!

आज हमने क्या किया?

🌟 **रचनात्मकता की उड़ान — हुक्म से आगे, सोच से परे**:
आज बच्चों में एक नया जोश दिखा। गतिविधियों में वे अब बताए से ज़्यादा करने लगे हैं — खुद नए डिज़ाइन सोचना, खुद नए तरीके आज़माना। यह वही पल है जब सीखना असली रूप लेता है। लेकिन सबसे दिलचस्प रहा कुकिंग का किस्सा —
घर पर कई बार देखा था, पर खुद कभी नहीं किया। आज पहली बार बच्चों ने गोबर के कंडे पर गक्कड़ सेंका! हाथ झिझके, मन डरा — पर comfort zone तोड़ने की यह हिम्मत देखते ही बनती थी।

👫 **अभिभावकों का अनमोल साथ — शुरू से अब तक**:
शिविर के पहले दिन से ही कई बच्चों के माता-पिता इस यात्रा में साथ रहे हैं। **रसोई में हाथ बँटाना, बच्चों की देखभाल करना, गतिविधियों में भाग लेना** — उनकी यह सहभागिता शिविर की असली ताकत बन गई है। जब माँ-बाप खुद सीखने और करने की राह पर चलें, तो बच्चों को क्या कहना! यह साझेदारी "मिट्टी की महक" को और भी महकदार बनाती आई है।

टीम गेम्स — बड़े समूह की पुरानी चुनौती, नई पहचान:
आज फिर टीम खेल हुए और फिर वही दृश्य — **20 के समूह में तालमेल बिठाना मुश्किल।** बच्चे छोटे-छोटे उपसमूहों में सोचते रहे, और पूरा बड़ा समूह एक पन्ने पर नहीं आ पाया।
और यहीं पर एक ज़रूरी बात उभरी जो सोचने पर मजबूर करती है —

क्या यह सिर्फ बच्चों की समस्या है? हम बड़े भी तो अक्सर ऐसा ही करते हैं — अपने-अपने समूह में सोचते हैं, और बड़ी तस्वीर से चूक जाते हैं!

शायद यह सीख बच्चों से ज़्यादा हमें याद रखनी चाहिए।

प्रार्थना में चर्चा — एक का कचरा, दूसरे का खज़ाना:
शाम की प्रार्थना के समय एक बेहद ज़रूरी विषय पर बात हुई — **कचरा और उसकी असलियत।** बच्चों को समझाया गया कि जो चीज़ एक के लिए बेकार है, वही दूसरे के लिए कच्चा माल बन जाती है। गोबर जो हम फेंक देते हैं — वही कंडा बनता है, वही खाद बनती है, वही आर्ट बनता है। **प्रकृति में कुछ भी व्यर्थ नहीं — बस नज़रिया बदलना होता है।**

कल की उम्मीद:
दस्सू चाचा के घर की माटी से शुरू होकर कचरे के खज़ाने तक पहुँचा आज का सफ़र एक ही बात कह गया — **हर चीज़ में संभावना है,** बस देखने वाली आँख चाहिए। कल बच्चे और परिवार मिलकर और नए रंग भरेंगे इस शिविर में!

Day 6

"मिट्टी की महक" समर कैंप - छठा दिन | जीविका आश्रम🌾
13 मई, 2026 ✨

किचन गार्डन की देखभाल से हुई छठे दिन की हरी-भरी शुरुआत!
आज सुबह आवासीय बच्चों ने किचन गार्डन में काम किया — दिन की शुरुआत से पहले ही धरती से जुड़ाव हो गया। सबसे अच्छी पाठशाला वही है जिसकी कोई दीवार न हो!

आज हमने क्या किया?

🎨 **चित्रकारी — प्रकृति का अपना रंगमंच**:
आज की चित्रकारी बिल्कुल अलग और अनोखी रही। बच्चों ने नीम की दातून को ब्रश बनाया और रंगों के लिए पूरी तरह प्रकृति पर भरोसा किया —

🟡 हल्दी — पीला रंग
⚫ कोयला — काला रंग
💙 अपराजिता के फूल — हल्का नीला
🟢 हरी पत्तियाँ — हरा रंग
🔵 इंडिगो — गहरा नीला

न प्लास्टिक का ब्रश, न बाज़ार के रंग — बस धरती ने खुद अपनी तस्वीर बनाई! वहीं गोबर आर्ट समूह ने भी आज अपनी पेंटिंग शुरू की।

🌾 **कुकिंग — गेहूँ से आटा, अपने हाथों से**:
आज रसोई में बच्चों ने कुछ ऐसा किया जो उनकी पीढ़ी के अधिकांश बच्चों ने कभी नहीं किया — पारंपरिक आटा चक्की पर गेहूँ पीसकर खुद आटा बनाया! जो आटा हम पैकेट से निकालते हैं, उसके पीछे की मेहनत आज हाथों ने महसूस की।

🔄 **नई गतिविधियाँ — नया उत्साह**:
बच्चे अब अपनी गतिविधियों में पूरी तरह सहज हो गए हैं। कुछ बच्चों को दोहराव लगने लगा था, इसलिए आज से शेष दिनों के लिए नई गतिविधियाँ आवंटित की गई हैं। नया काम, नई चुनौती, नया जोश!

🍘 **प्रार्थना में चर्चा — 10 रुपये के चिप्स का सच**:
आज की प्रार्थना में एक बेहद दिलचस्प और ज़रूरी चर्चा हुई। हमारे पास थे — दो 10 रुपये के चिप्स के पैकेट और 1 किलो आलू।
पहले तुलना की —

एक पैकेट में मात्र **32 ग्राम चिप्स** और मुश्किल से **25-30 चिप्स**
एक आलू से चॉपर से बनाए **42 चिप्स!**

फिर बात आगे बढ़ी — उस 10 रुपये के पैकेट की पूरी कहानी सामने आई:

🏭 **बनाने की लागत** कितनी होगी?
🚚 **कितनी दूर** से आया होगा यह पैकेट?
🧪 **कितने रसायन** मिले हैं इसमें?
😋 **लत क्यों** लग जाती है इसकी?
📺 और जब **खिलाड़ी और अभिनेता** इसका विज्ञापन करते हैं और करोड़ों कमाते हैं — **तो असली कीमत कौन चुकाता है? — हमारे माँ-बाप!**

यह चर्चा सिर्फ चिप्स की नहीं थी — यह थी समझदार उपभोक्ता बनने की पहली पाठशाला।

कल की उम्मीद:
किचन गार्डन की मिट्टी से शुरू होकर चिप्स के सच तक पहुँचा आज का दिन एक बड़ा सवाल छोड़ गया — **जो चमकता है, वह सोना नहीं होता।** असली पोषण, असली मेहनत और असली समझ — यही "मिट्टी की महक" की सीख है!

Day 7

"मिट्टी की महक" समर कैंप - सातवाँ दिन | जीविका आश्रम 🌾
14 मई, 2026 ✨

कल की भजन संध्या की मिठास के साथ हुई सातवें दिन की शुरुआत!
कल रात हमारे आश्रम में एकादशी की **भजन मंडली** ने अपने मधुर भजनों से पूरे वातावरण को भक्तिमय कर दिया था। बच्चों सहित सभी ने खूब आनंद लिया। ऐसी मधुर रात के बाद आज सुबह आवासीय बच्चों को जल्दी नहीं उठाया — यह आराम भी तो ज़रूरी था!

आज हमने क्या किया?
🌟 **नई गतिविधियाँ — नया जोश :**
आज बच्चों में नई गतिविधियों को लेकर गज़ब का उत्साह दिखा। हालाँकि जो बच्चे अपनी पुरानी गतिविधि में पूरी तरह रम गए थे, उन्हें वही जारी रखने दिया गया। **सीखने की लगन को बीच में क्यों तोड़ें!**

🌶️ **आम का शरबत — एक बच्चे की मेहमाननवाज़ी:**
आज का सबसे प्यारा पल तब आया जब हमारे एक बच्चे ने — जिसने कुकिंग में **आम का शरबत** बनाना सीखा था — खुद बनाकर सबके लिए लेकर आया। उस एक गिलास शरबत में था आत्मविश्वास का स्वाद और सीखने की खुशी। यही है "मिट्टी की महक" की असली मिठास!

🎯 **छोटे बच्चों के मज़ेदार खेल:**
छोटे बच्चों ने हमेशा की तरह शाम को अपने मनपसंद खेलों की धूम मचाई — हँसी, उत्साह और मस्ती से भरा समय!

👧🧒 **12 वर्ष और उससे ऊपर के बच्चों के साथ विशेष सत्र:**
शाम को 12 **साल और उससे बड़े बच्चों का एक अलग समूह** बनाया गया। पहले एक मज़ेदार आइसब्रेकर गेम हुआ और फिर दो गहरे विषयों पर बातचीत हुई —

💭 **अस्वीकृति का डर और सामाजिक चिंता**

🕊️ **स्वतंत्रता की ज़रूरत और दबी हुई पहचान**

बच्चों ने इन विषयों पर बड़े खुलेपन और उत्साह के साथ भाग लिया। इस उम्र के बच्चों को ऐसी चर्चा कितनी ज़रूरी और पसंद है — यह आज साफ़ दिखा। कल और नए सवालों के साथ यह सिलसिला जारी रहेगा!

कल की उम्मीद:
भजन की मधुर स्मृति से शुरू होकर मन की गहराइयों तक पहुँचा आज का दिन एक बात कह गया — **खुद को जानो, अपनी आवाज़ को पहचानो** । कल नए सवाल, नई सोच और नई सीख लेकर फिर मिलेंगे!

Day 8

"मिट्टी की महक" समर कैंप - आठवाँ दिन | जीविका आश्रम 🌾
15 मई, 2026 ✨

जंगल की आवाज़ों से हुई आठवें दिन की शांत और गहरी शुरुआत!
आज सुबह लगभग 6 बजे बच्चे निकले पास के जंगल की ओर — उसी रास्ते से जहाँ गाँव के लोग बीड़ी के लिए पत्तियाँ चुनने जाते हैं। जंगल के भीतर कुछ दूर जाकर सब चुपचाप बैठ गए और बस... सुना। पत्तों की सरसराहट, पक्षियों की आवाज़ें, हवा का बहना — प्रकृति का यह मौन संगीत शहर में कहाँ मिलता है! यह शांति अपने आप में एक बड़ी सीख थी।

आज हमने क्या किया?
🎨 **कैनवास पेंटिंग — साझा कैनवास, साझी कल्पना**:
आज बच्चों ने कैनवास पेंटिंग की। कुछ बच्चों को एक ही कैनवास दो-दो को मिलकर बनाना था। और देखिए कमाल — न कोई झगड़ा, न कोई शिकायत। दोनों ने मिलकर बिना किसी शोर-शराबे के बेहद अनोखी और रचनात्मक कलाकृतियाँ बनाईं। जब दो मन मिलकर काम करें तो नतीजा कुछ अलग ही होता है!

🪵 **गोबर आर्ट — रंगों से सँवरती कलाकृतियाँ**:
पिछले दो दिनों से गोबर आर्ट में बनाई गई कलाकृतियों पर रंग भरने का काम जारी है। जो वस्तुएँ कभी गोबर और मिट्टी से बनी थीं, वे अब रंगों की चादर ओढ़कर खिल रही हैं।

🏺 **कुम्हारी — हाथों से बनाना और औज़ारों की पहचान**:
आज कुम्हारी में बच्चों ने सिर्फ हाथों से मिट्टी की वस्तुएँ बनाना सीखा — बिना चाक के, सिर्फ उँगलियों और हथेलियों के बल पर। साथ ही मिट्टी पर नक्काशी करने के औज़ारों से भी परिचय हुआ। और एक रोमांचक खबर — कल एक छोटी भट्टी (भट्टा) लगाई जाएगी जिसमें बच्चों द्वारा बनाई गई मिट्टी की वस्तुओं को पकाया जाएगा। कच्ची माटी जब आग से गुज़रती है, तभी वो असली रूप लेती है!

🕸️ **बड़े बच्चों के साथ — "परस्परता का जाल" (Web of Interdependence)**:
शाम को फिर दो समूह बनाए गए। बड़े बच्चों के साथ हुई एक बेहद गहरी और असरदार गतिविधि — **"परस्परता का जाल"** । इस गतिविधि में बच्चों ने समझा कि गाँव में या किसी भी समुदाय में हर व्यक्ति किसी न किसी तरह दूसरे पर निर्भर है — किसान, कुम्हार, बढ़ई, दुकानदार, शिक्षक। जब यह जाल टूटता है — जब कोई एक धागा कट जाता है — तो कुछ लोग अकेले पड़ जाते हैं। और फिर वे मजबूर होते हैं सब कुछ नए सिरे से शुरू करने के लिए, शायद गाँव छोड़कर शहर में सिक्योरिटी गार्ड या कुछ और बनने के लिए।
यह चर्चा सिर्फ एक खेल नहीं थी — यह था **गाँव के टूटते ताने-बाने का जीवंत अनुभव** । बच्चे इस चर्चा में पूरी तरह डूब गए।

(इस गतिविधि के बारे में और जानें: https://neependra.net/index.php/activity-web-of-interdependence/)

🙏 **प्रार्थना के साथ दिन का समापन**:
जंगल की शांति से शुरू हुआ दिन, प्रार्थना की शांति पर समाप्त हुआ।

कल की उम्मीद:
कल का दिन बहुत खास होगा — **भट्टी में पकेंगी बच्चों की बनाई मिट्टी की कलाकृतियाँ** । जिस माटी को उन्होंने अपने हाथों से आकार दिया, कल वो आग से निखरकर हमेशा के लिए पक्की हो जाएगी — ठीक वैसे ही जैसे अच्छी सीख, जीवन भर साथ रहती है!

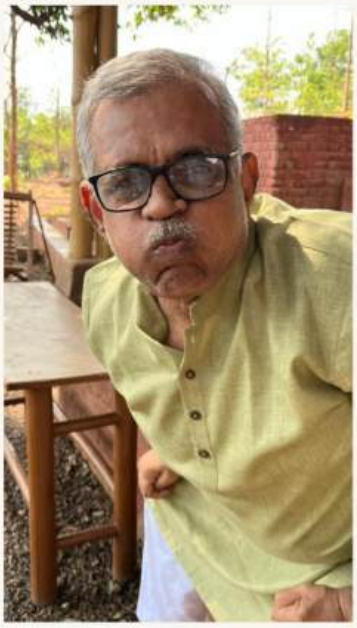

Day 9

"मिट्टी की महक" समर कैंप - नौवाँ दिन | जीविका आश्रम 🌾
16 मई, 2026 ✨

मंदिर और गीता पाठ से हुई नौवें दिन की पावन शुरुआत!
आज सुबह बच्चे पास के मंदिर गए और वहाँ गीता पाठ में शामिल हुए — जो हर दिन होता है और अधिकांश गाँव के बच्चे छुट्टियों में नियमित रूप से इसमें भाग लेते हैं। इस पावन शुरुआत ने पूरे दिन को एक अलग ऊर्जा से भर दिया।

आज हमने क्या किया?

🎩 **जादूगर मामा का जादुई दिन**:
आज का दिन पूरी तरह खास रहा — मुंबई से पधारे "जादूगर मामा" ने पूरे दिन अकेले ही सभी बच्चों को अपने साथ बाँधे रखा। बच्चों ने जादू के अनेक करतब देखे और सीखे भी। उनके सत्र में था —

🪄 जादू के रोमांचक खेल — जो देख बच्चे दंग रह गए
📖 कहानियाँ — जिनमें थे अच्छे संस्कार और जीवन की सीखें
😄 खूब हँसी-ठहाके — मस्ती और मनोरंजन से भरे पल
💝 माँ का नि:स्वार्थ प्रेम — जादूगर मामा ने बहुत ही हृदयस्पर्शी तरीके से बताया कि माँ का प्यार कितना अनमोल है और जिन बच्चों के पास माँ है वे कितने भाग्यशाली हैं
🎁 सभी बच्चों को उपहार — जादूगर मामा ने हर बच्चे को प्यार से तोहफा दिया

जादूगर मामा का बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने इतनी दूर से आकर हमारे बच्चों के दिन को इतना यादगार और जादुई बना दिया!
🙏

🏺 **भट्टी का दिन**:
आज हमारे कुम्हार कारीगर ने भट्टी तैयार की और बच्चों ने अपनी बनाई मिट्टी की कलाकृतियाँ उसमें सजाईं। कल सुबह तक ये कलाकृतियाँ आग में पककर पक्की हो जाएँगी। जिस माटी को इन नन्हे हाथों ने आकार दिया — कल वो हमेशा के लिए पक्की हो जाएगी!

📝 **अपनी डायरी लिखना — मन की बात, अपने शब्दों में**:
आज बच्चों को रोज़ डायरी लिखने का महत्व समझाया गया। शुरुआत के लिए कुछ प्रश्न दिए गए जिनसे बच्चों ने अपने शिविर के अनुभवों पर विचार किया। बच्चों की कलम से निकलीं कुछ खास बातें —

🎨 अधिकांश बच्चों को पेंटिंग और कुकिंग सबसे ज़्यादा पसंद आई
🧵 चरखा मुश्किल लगा था, पर धीरे-धीरे सब सहज हो गए
🪵 गोबर से कलाकृतियाँ बनाना बिल्कुल नया अनुभव था — किसी ने सोचा भी नहीं था कि गोबर से इतना कुछ बन सकता है!
🍽️ कई बच्चों ने पहली बार अपने बर्तन और कपड़े खुद धोए
🚫 चिप्स वाली चर्चा ने गहरी छाप छोड़ी — बच्चों ने लिखा कि वे अब पैकेटबंद खाने से दूर रहेंगे
💧 आश्रम में कभी-कभी पानी की समस्या हुई — कई बच्चों ने पहली बार देखा कि नल से पानी खत्म हो सकता है और हैंडपंप से पानी लाना पड़ता है
और भी बहुत कुछ जो इन बच्चों के अनुभव की थाती बन गया...

कल का समापन समारोह:
शिविर का आखिरी दिन कल है। सुबह समापन समारोह होगा जिसमें बच्चों द्वारा बनाई गई सभी कलाकृतियाँ प्रदर्शित की जाएंगी और हमारे सभी सहयोगी सूत्रधारों का आभार व्यक्त किया जाएगा। यह शिविर सिर्फ 10 दिनों का नहीं था — यह था एक ऐसी यात्रा जो इन बच्चों के मन में हमेशा के लिए बस गई।

"मिट्टी की महक" — जो एक बार लगी, वो कभी नहीं जाती। 🌾

DAY # 10

"मिट्टी की महक" समर कैंप - दसवाँ दिन | जीविका आश्रम 🌾
17 मई, 2026 ✨

उत्साह और भावुकता के मिले-जुले एहसास के साथ हुआ दसवें दिन का आगाज़!
आज का दिन अलग था — चेहरों पर खुशी भी थी और आँखों में एक अनकही उदासी भी। बच्चे हों या आयोजक — सभी के मन में वही भाव था जो किसी बेहद प्यारी चीज़ के खत्म होने पर होता है। यह वो स्वाद था जिसे हम हमेशा बनाए रखना चाहते हैं।

आज हमने क्या किया?

🏺 **कारीगर यंत्रों और कलाकृतियों की प्रदर्शनी**:
सुबह सबसे पहले बच्चों द्वारा पिछले 10 दिनों में बनाई गई सभी कलाकृतियाँ सजाई गईं — मिट्टी के बर्तन, गोबर आर्ट, पेंटिंग्स और बहुत कुछ। साथ ही कारीगर यंत्र भी प्रदर्शित किए गए। इसी के बीच दीप प्रज्वलन के साथ समापन समारोह का विधिवत आगाज़ हुआ।

🎭 **विशेष अतिथियों का आगमन**:
जबलपुर से दो विशेष अतिथि पधारे —

आशुतोष द्विवेदी — विवेचना रंगमंडल
विनय अंबर — JALAM (जबलपुर आर्ट, लिटरेचर एंड म्यूज़िक फेस्टिवल)

साथ ही गाँव के कई बच्चों के **माता-पिता** भी इस खास मौके पर शामिल हुए।

🎤 **10 दिनों का सफ़र — बच्चों और अभिभावकों की ज़ुबानी**:
शिविर के 10 दिनों का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत किया गया। इसके बाद बच्चों को अपने अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया — और जो बातें निकलीं, वे सुनकर मन भर आया।
गाँव के अभिभावकों ने भी अपने अनुभव साझा किए —

* बच्चे शिविर में आने के लिए कितने **उत्साहित** रहते थे
* कैसे उनकी रुचि अब **पेड़ चढ़ने, खाना बनाने, कुम्हारी और पेंटिंग** में जागी है
* कैसे ये 10 दिन उनके बच्चों के लिए एक नई दुनिया के द्वार खोल गए
गए

🙏 **सूत्रधारों का आभार**:
शिविर की विभिन्न गतिविधियों को सफलतापूर्वक चलाने में जिन सभी सूत्रधारों ने अपना योगदान दिया, उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया गया।

🌟 **नीपेंद्र खरे का सम्मान**:
इसके बाद आशीष जी ने अतिथियों से अनुरोध किया कि वे **नीपेंद्र खरे** को सम्मानित करें — जो इस शिविर के विचार के पहले दिन से आशीष जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले और जिनके बिना **"मिट्टी की महक"** संभव नहीं हो पाती। यह सम्मान उनकी मेहनत, समर्पण और इस सपने को साकार करने की लगन का प्रतीक था।

📸 **यादों को समेटते हुए — ग्रुप फोटो**:
अंत में सबने मिलकर ग्रुप फोटो खिंचवाए — वो पल जो तस्वीरों में तो कैद हो गए, पर इन बच्चों और आयोजकों के दिलों में तो वे हमेशा-हमेशा के लिए बस गए।

"मिट्टी की महक" — एक विदाई, अनेक यादें:
10 दिन, 40+ बच्चे, अनगिनत सीखें और ढेर सारी यादें। यह शिविर सिर्फ गतिविधियों का संग्रह नहीं था — यह था एक ऐसी यात्रा जिसने बच्चों को अपनी माटी से, अपनी जड़ों से और खुद से जोड़ा।

जब तक माटी की यह महक हमारे साथ है — हम फिर मिलेंगे! 🌾

धन्यवाद — उन सभी बच्चों को, अभिभावकों को, सूत्रधारों को, अतिथियों को और हर उस इंसान को जिसने इस सपने को साकार करने में अपना प्यार और मेहनत लगाई। 🙏

बच्चों का प्रतिक्रिया

मुझे यहाँ सब कुछ सीखना और करने मिला | यह मेरी अब तक की सबसे अच्छी समर हॉलिडे रही |

सोम, 15 वर्ष

यहाँ आकर मैंने खुद से और प्रकृति से अपना रिश्ता नए सिरे से जाना।

अनहद , 10 वर्ष

प्रिया , 10 वर्ष

मुझे यह शिविर बहुत ही अच्छा लगा | हमने बहुत दोस्त बनाये और नई नई चीज़ें सीखी |

इस शिविर ने मुझे एक इस्तिर्था प्रदान की है, जो मुझे शहर में नहीं मिलती। मैंने बहुत से दोस्त बनाये।

नील, 14 वर्ष

और बहुत सारे .....

सहयोग करें — एक छोटा कदम, बड़ा बदलाव

इस वर्ष **"मिट्टी की महक — ग्रीष्मकालीन बाल शिविर"** में इंद्राना व आसपास के गाँवों के **30+ ग्रामीण बच्चों** ने लिया। इन बच्चों के लिए यह शिविर पूरी तरह **नि:शुल्क रहा** — और यह संभव हुआ केवल आप जैसे साथियों के सहयोग से।

यह केवल एक शिविर नहीं है। जीविका आश्रम, इन ग्रामीण बच्चों के साथ पूरे वर्ष जुड़ा रहता है — कला, शिल्प, पर्यावरण, स्वास्थ्य और जीवन-कौशल से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से। हमारा प्रयास है कि ये बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रहें और एक सम्पूर्ण, आत्मनिर्भर जीवन की ओर अग्रसर हों।

जीविका आश्रम के सभी कार्यक्रम किसी सरकारी अनुदान या बड़े संस्थान के सहारे नहीं, बल्कि समान सोच वाले साथियों के छोटे-छोटे योगदानों से चलते हैं।

आपका सहयोग इन बच्चों के लिए ऐसे और कार्यक्रमों को सारे वर्ष संभव बनाएगा।
UPI द्वारा सहयोग करें: 9425325659@upi

सहयोग भेजने के बाद कृपया इस नंबर पर सूचित करें: 9425325659 |

9425325659@upi

बैंक खाते का विवरण

खाताधारक का नाम : Ashish Kumar Gupta
बैंक : State Bank of India
खाता संख्या : 10526435306
खाता प्रकार : Savings Account
शाखा : Wright Town, Jabalpur
IFSC : SBIN0000391

अगले वर्ष (2027) के ग्रामीण समर कैंप में रुचि

जीविका आश्रम, मई 2027 में "मिट्टी की महक — Village Summer Camp" का आयोजन करने जा रहा है। अगर आप आगामी कैंप में शामिल होना चाहते हैं, तो कृपया यह फ़ॉर्म भरें। हम आपको सभी अपडेट समय पर देते रहेंगे। 😊

https://tinyurl.com/JASCIP27

ग्रामीण समर कैंप 2027 — स्वयंसेवक रुचि फ़ॉर्म

जीविका आश्रम, मई 2027 में "मिट्टी की महक — Village Summer Camp" का आयोजन करने जा रहा है।

इस कैंप को खास बनाने के लिए हमें आप जैसे उत्साही स्वयंसेवकों की ज़रूरत है, जो 8 से 15 वर्ष के बच्चों के साथ अपना हुनर साझा कर सकें — चाहे वो चित्रकला हो, लेखन, रंगमंच, रोबोटिक्स या कोई भी अन्य रचनात्मक विधा।

अगर आप इस सफ़र का हिस्सा बनना चाहते हैं, तो कृपया यह फ़ॉर्म भरें। हम आपको सभी अपडेट समय पर देते रहेंगे। 😊

https://tinyurl.com/JASCIV27

"**जीविका आश्रम**" मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर से लगभग 30 किलोमीटर दूर, ऐतिहासिक गोंडवाना क्षेत्र में, **इन्द्राना गाँव** में स्थित है। यह विंध्य की तलहटी में बसा है और हिरन नदी के किनारे के निकट है, जो आगे जाकर नर्मदा में मिलती है।

आश्रम एक जीवंत स्थान है जो भारत की शिल्प, कृषि और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और दस्तावेज़ीकरण करने के लिए समर्पित है। यह पारंपरिक आश्रमों और गुरुकुलों की तरह काम करता है और व्यक्तिगत शुभचिंतकों के सहयोग से चलता है। शिल्पकार, किसान, विद्यार्थी, शोधकर्ता और जिज्ञासु – सभी यहाँ कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से एक साथ जुड़ते हैं।

शंकरगढ़ पहाड़ी की तलहटी में बसे इस आश्रम का आसपास के परिवेश से गहरा और सीधा जुड़ाव है। इसका पुस्तकालय, संग्रहालय, कार्यशाला स्थल, औषधीय और रसोई वाटिकाएं, पारंपरिक स्थापत्य शैली में बनी इमारतें और सामुदायिक नेटवर्क इसे पारिस्थितिक शिक्षा, सांस्कृतिक अध्ययन और भूमि से जुड़े जीवन के लिए एक स्वाभाविक केंद्र बनाते हैं।

आश्रम की शुरुआत लगभग नौ वर्ष पहले आशीष गुप्ता और रागिनी गुप्ता ने अपने घर के रूप में की थी। यहीं वे अपनी दो बेटियों – आद्या और मानसवी – का पालन-पोषण कर रहे हैं। इसकी स्थापना आदिलाबाद के स्वर्गीय श्री रवींद्र शर्मा के आशीर्वाद से हुई थी और यह देशज ज्ञान परंपराओं के संरक्षण को समर्पित है।

वर्षों में जीविका आश्रम विविध परंपराओं के अभ्यास और उत्सव का स्थान बन गया है – लौहकर्म, बाँस शिल्प, मूर्तिकला, रंगमंच, खेती, लोककलाएं, संगीत और ग्रामीण जीवन।

स्थल की विस्तृत जानकारी इस लिंक पर मिलेगी: https://linktr.ee/jeevikaashram ।

बच्चों से संबंधित अन्य आगामी कार्यक्रम

आगामी (2026) जुलाई माह से जबलपुर के **जीविका आश्रम परिसर** में 11 से 13 वर्ष (प्रवेश आयु) के बालकों के लिए **आवसीय अनादि धर्म गुरुकुलम** आरम्भ होने जा रहा है।

जीविका आश्रम और अनादि फाउंडेशन, पलानी (तमिलनाडु) का यह साझा उपक्रम भारत में सदियों से चले आ रहे ऋषियों के ज्ञान को, जो लोक संग्रह के लिए गाँवों में आज भी इस्तेमाल किया जा रहा है, लोगों तक पहुँचाने की दिशा में एक प्रयास होगा। विद्यार्थी प्रकृति-पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य, नेतृत्व, आदि जैसे भविष्य की समस्याओं को हल करने के लिए स्थानीय ज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम से गुजरेंगे। पाठ्यक्रम में संस्कृत, हिंदी, भारतीय विज्ञान, गणित और अलग-अलग कला-कारीगरियों का मिश्रण होगा जो जीवन, जीवनशैली और आजीविका को एक साथ साधकर आगे बढ़ेगा।

अनादि फाउंडेशन के गुरुकुलों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए www.anaadi.org/gurukulam पर जा सकते हैं।

लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु!